इन्क़िलाबी नज़र

आवाज़ ... आम आदमी की

लखनऊ, सोमवार, 21 अक्टूबर 2024

जिस व्यक्ति ने कभी गलती नहीं की उसने कभी कुछ नया करने की कोशिश नहीं की।
-अल्बर्ट आइंस्टीन

वर्ष 13 अंक 30 मूल्य 4-00 रुपया पृष्ठ- 12

तापमान - अधिकतम 35.8°C (+3.3) न्यूनतम 20.5°C(+0.0) सेंसेक्स 81,224.75 (+218.14) निफ्टी 24,854.80 (+113.55) सोना 79,570 चांदी 97,500 मुद्रा - डालर 84.07 दिरहम 22.89 रियाल 22.41

इल्म की भट्ठी में तपकर कुंदन बने डॉ. काजिम अली खां : डॉ. आफताब आलम

डॉ. काजिम अली खां के व्यक्तित्व और शैक्षिक सेवाओं पर दो दिवसीय सेमिनार सम्पन्न

बुद्धिजीवियों और शोधार्थियों ने पेश किये अपने शोध पत्र

लखनऊ (सं)। डॉ. काजिम अली खां के व्यक्तित्व और शैक्षिक सेवाएं विषय पर दो दिवसीय सेमिनार के अंतिम दिन रविवार को कई बुद्धजीवियों और रिसर्च स्कॉलर्स ने उनसे जुड़े शोध पत्रों को पढ़ा। एरा विश्वविद्यालय और मौलाना आजाद नेशनल उर्दू विश्वविद्यालय के सहयोग से आयोजित सेमिनार में बड़ी संख्या में छात्र, बुद्धजीवी और रिसर्च स्कॉलर्स शामिल हुए।

दूसरे दिन मौलाना आजाद नेशनल उर्दू विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित सेमिनार के पहले सत्र में डॉ. काजिम अली खां के शैक्षिक और अदबी पत्रावली पर अपना शोध पत्र पढ़ते हुए नई दिल्ली के जामिया मिलिया इस्लामिया के उर्दू विभाग के डॉ. शाहनवाज फय्याज ने बताया कि आज हम जब डॉ. काजिम अली खां के खत तलाश करते हैं तो पता चलता है कि उनके लिखे कई खत अभी तक प्रकाशित ही नहीं हुए हैं। इस पर उन्होंने एरा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. डॉक्टर अब्बास अली मेहदी से डॉ. काजिम अली खां के ऐसे खतों को तलाश करवा कर उन्हें प्रकाशित करने की बात कही। उन्होंने बताया कि डॉ. काजिम अली खां ने खुद ही कहा था कि कई बड़े अदबियों के साथ उनकी खत-ओ-किताबत रही है। उनमें मौलाना इम्तियाज अली अरशी, प्रो. मसूद हसन खान, प्रो. नूरुल हसन हाशमी, मालिक राम, प्रो. आले अहमद, निसार अहमद फारूकी, प्रो. अली जव्वाद जैदी जैसे कई नाम हैं जिनके साथ उनकी खत-ओ-किताबत रही है। डॉक्टर शाहनवाज फय्याज ने डॉ.काजिम अली खां के एक खत का जिक्र करते हुए बताया कि उन्होंने गोपीचन्द नारंग को एक खत में अपनी बेटी डॉक्टर फरजाना मेहदी की प्रो. डॉक्टर मेहदी हसन के बेटे प्रोफेसर डॉक्टर अब्बास अली मेहदी से दिसम्बर 1989 में होने वाली शादी के लिए दिल्ली में आकर खरीदारी करने का जिक्र किया। एक खत में डॉ. काजिम अली खां ने अपने बड़े बेटे मोहसिन अली खां की शादी का जिक्र भी किया।

डॉ. काजिम अली खां पर दो दिवसीय सेमिनार के समापन पर

लखनऊ और अलीगढ़ दोनों को करीब से जानते थे

डॉक्टर आफताब आलम नजमी ने अपना शोध पत्र पढ़ते हुए कहा कि नवाबी दौर से लखनऊ अपनी जुबान के लिए दुनिया भर में मशहूर था। उन्होंने कहा कि डॉ. काजिम अली खो ने अलीगढ़ में रहते हुए लोगों को अपना दीवाना बना लिया था। अलीगढ़ उनकी रग रग और नस नस में बसा था। डॉ.काजिम अली खां लखनऊ और अलीगढ़ दोनों ही शहरों को करीब से जानते थे। वह उर्दू, अरबी, फारसी जुबान के साथ साथ सहाफत में भी माहिर थे। उन्होंने कहा कि इल्म की भट्ठी में तपकर उनकी शख्सियत कुंदन बन गई।

अपने साहित्य में गजल और कहानी का बैलेंस बनाये रखा

डॉक्टर अकबर अली के संचालन में हुए इसी सत्र में प्रोफेसर उमर कमालुद्दीन ने डॉ. काजिम अली खां के शैक्षिक और अदबी जीवन पर प्रकाश पर डालते हुए कहा कि डॉ. काजिम अली खां ने अपने साहित्य में गजल, कहानी और खत-ओ-किताबत का एक बैलेंस बनाये रखा जोकि आज की युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणादायक है और शैक्षिक जीवन के लिए काफी फायदेमंद है। उनके खत सिर्फ खैरियत और दरियाफ्त के लिए नहीं बल्कि लिखने और पढ़ने वालों के इल्म और अदब में इजाफा करते हैं।

डॉक्टर महजर रजा और डॉ. शाह मो. फायज ने डॉक्टर इशरत नाहिद के संचालन में काजिम अली खां के व्यक्तित्व और शैक्षिक सेवाओं पर अपने अपने शोध पत्र पढ़ते हुए उनके जीवन के कई पहलुओं पर चर्चा की।

अन्य लिखने वालों से काफी अलग थे काजिम अली खां

डॉ. काजिम अली खां के व्यतित्व और शैक्षिक सेवाओं पर हुए सेमिनार में डॉक्टर शाह आलम ने काजिम अली खां की मुकदमा निगारी विषय पर शोध पत्र पढ़ा। उन्होंने कहा कि उनका तहकीकी मिजाज अन्य लिखने वालों से काफी अलग है। काजिम अली खां ने अपने साहित्य से मुल्क के रहनुमाओं को भी सिखाने की कोशिश की है। सेमिनार के तीसरे सत्र की अध्यक्षता डॉ. शाह आलम ने और संचालन डॉ. सरफराज अहमद खान ने किया।

सेमिनार में राजर्षि टण्डन मुक्त

विवि के डॉ. अ ब द ु ल रहमान फैसल ने डॉ. काजिम अली खां के अफसानों पर लिखे लेखों पर अपना शोध पत्र पेश किया। उन्होंने कहा कि डॉ. काजिम अली खां ने शायरी पर अधिक काम किया लेकिन दो लेख अफसानों पर लिखे, जिनमें बाग-ओ-बहार और उमराव जान अदा हैं। उन्होंने दोनों लेखों पर आलोचनात्मक अध्ययन की विस्तार से चर्चा की।

वहीं नई दिल्ली के जामिया मिलिया इस्लामिया विवि के एसो. प्रो. डॉ. मुकीम खान ने डॉ. काजिम अली खां के नासीख और क्लासिकी उर्दू शायरी पर अपना शोध पत्र पेश किया।

अपने बच्चों को उच्च शिक्षा देकर क्या खूब काम किया : प्रो. नैय्यर

अध्यक्षता कर रहे कर रहे प्रो. अब्बास रजा नैय्यर ने कहा कि डॉ. काजिम अली खां एक विषय पर दर्जनों शोध पत्र लिखने की महारत हासिल रखते थे। उन्होंने कहा कि काजिम अली खां ने दर्जनों किताबें लिखकर इल्म का दरिया बहाया है। प्रो.अब्बास रजा नैय्यर ने काजिम अली खां के परिवार की तारीफ करते हुए कहा कि उनकी तीन बोलती हुई किताबें यानि कि मोहिसन अली खां, मीसम अली खां और डॉक्टर फरजाना मेहदी को उच्च शिक्षा देकर क्या खूब काम किया है। उनका यह कार्य आज समाज को फायदा पहुचा रहा है। उन्होंने प्रोफेसर डॉक्टर अब्बास अली मेहदी की तारीफ करते हुए कहा कि डॉ.मेहदी ने विश्व में अपनी अलग पहचान बनाई है। अब्बास रजा नैय्यर ने कहा कि जब डॉ.काजिम अली खां तकरीर करते थे तो हर सुनने वाला पूरे ध्यान से उनकी बातों को अपने दिलो दिमाग में उतार लेता था।

उन्होंने कहा कि डॉ. काजिम अली खां ने नासीख के दीवानों से गजले अलग करने का अजीम कारनामा अंजाम दिया। उन्होंने नासीख के दीवान में से दूसरे और तीसरे दीवान को अलग किया और दीवानों के अलग करने के पीछे की पुख्ता वजहें भी बताई कि दूसरे दीवान में तीसरे दीवान की गजलें शामिल हैं। उन्होंने कहा कि डॉ. काजिम ने बताया कि नासीख के तीसरे दीवान में कुल 137 गजलें हैं। नासीख के तीसरे दीवान का चयन उनका बड़ा कारनामा है, जिस पर यकीन किया जा सकता है। साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार से पुरस्कृत महाराष्ट्र के यशवंत राव चहवाण विवि के डॉ. रशीद अशरफ खान ने कहा कि उनका शुमार बेहतरीन साहित्यकारों में है। उन्होंने कई किताबें लिखीं जो हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में प्रसिद्ध हैं। खुतूते गालिब से उन्हें खासी प्रसिद्धि हासिल हुई।

मौलाना आजाद राष्ट्रीय उर्दू विवि ल ख न ऊ कैम्पस की डॉ. नूर फातिमा ने डॉ. काजिम अली खां के आलोचनात्मक चेतना पर अपना शोध पत्र पेश किया। उन्होंने उमराव जान अदा पर विस्तार से चर्चा करते हुए डॉ. काजिम अली के मीर अनीस के लिखे मर्सियों और आतिश पर किये शोध पर भी चर्चा की। सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ. शाह आलम ने कहा कि डॉ. काजिम अली खां जैसे व्यक्तित्व पर कार्यक्रम बहुत पहले होना चाहिए था। उन्होंने कहा कि जिन लोगों ने अपने शोध पत्र पेश किये उन्होंने बहुत सलीके से अपनी बातें रखीं।

चौथे और समापन सत्र की अध्यक्षता प्रो. अहमद महफूज और संचालन डॉ. उमैर मंजर ने किया।

सेमिनार के आखिरी सत्र में लखनऊ विवि से डॉ. काजिम अली खां के शोध पर पी.एच.डी. कर रहे हैदर रजा ने अपना शोध पत्र पेश करते हुए उनके आलोचनात्मक बिन्दुओं पर चर्चा की। सेमिनार को सम्बोधित करते हुए डॉ. गुलशन मसर्रत ने कहा कि डॉ. काजिम अली खां किसी परिचय के मोहताज नहीं। लगभग 50 साल से अधिक समय तक आलोचनात्मक काम किया। उन्होंने डॉ. काजिम अली खां के मकालात और नशरियात पर अपना शोध पत्र पेश करते हुए मकाला और नशर का अर्थ बताया। डॉ. गुलशन ने कहा कि डॉ. काजिम की मकालात और नशरियात किताब में 16 मकाले शामिल हैं जो उनके चार सालों का साहित्यिक निचोड़ हैं।

इल्मी फिक्रमंदी को जाहिर करते हैं उनके खत

डॉक्टर अतहर हुसैन ने अपना शोध पत्र पढते हुए कहा कि डॉ.काजिम अली खो के खत उनके काम करने के तरीके और इल्मी फिक्रमंदी को जाहिर करते हैं। उन्होंने कहा कि काजिम अली खां ने अपने साहित्य के जरिये शहरे अदब लखनऊ का दुनिया में प्रतिनिधित्व किया है। डॉ. अतहर हुसैन ने कहा कि उनकी खत-ओ-किताबत इल्मी अदब की एक अलग दुनिया है।

जामिया मिलिया इस्लामिया विवि

दिल्ली के डॉ. मुश्ताक अहमद तजावरी ने कहा कि डॉ. काजिम अली खां ने दिल्ली के गालिब इंस्टीट्यूट में एक मकाला 10-12 मिनट पढ़ा और कहा कि यह प्रस्तावना है मकाला जब छपेगा तब पढ़ें। उन्होंने कहा कि डॉ. काजिम ने गालिब के खतों की तारीख बताने का अजीम कारनामा अंजाम दिया। खतों की तारीख के लिए उन्होंने तकवीम (कैलेण्डर) का इस्तेमाल किया और चीजों की निशानदेही जैसे किसी की पैदाइश, किसी किताब के छपने के वर्ष का भी सहारा लिया। उर्दू साहित्य और भाषा के लिए उनका काम बहुत महत्वपूर्ण है। मिर्जा दबीर पर उनकी किताब का अपना विशेष स्थान है। गालिबियात पर उनकी दो किताबों की चर्चा बराबर होती है।

शिया कॉलेज के डॉ. नाजिम अली खां ने डॉ. काजिम अली खां और दबीरफहमी पर अपना शोध पत्र पेश करते हुए डॉ. नय्यर मसूद की बात कहते हुए कहा कि वर्ष 1989 में दबीर पर प्रकाशित पुस्तक में डॉ. काजिम अली खां ने मिर्जा दबीर के फन के गोशों को उजागर किया। उनके कार्यकाल में शिया कॉलेज की मैगजीन निकालते थे और दो विशेषांक निकाले जिसमें उस समय के बड़े-बड़े साहित्यकारों ने अपने लेख भेजे जो प्रकाशित हुए। उस मैगजीन से काफी प्रसिद्धि मिली और वे आज भी कॉलेज में संरक्षित हैं, जिन पर काम काम हो रहा है।

सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो. अहमद महफूज ने डॉ. काजिम अली खां पर सेमिनार के लिए आयोजन समिति का आभार जताया। उन्होंने कहा कि सेमिनार में जितने लोगों को बुलाया वे सभी मौजूद हैं यह बड़ी बात है। इतने लोगों ने अपने शोध पत्र पेश किये और किसी का भी शोध पत्र किसी से टकराया नहीं यह बताता है कि डॉ. काजिम अली खां ने कितने विस्तृत रूप में काम किया। डॉ. काजिम अली खां के मिर्जा गालिब पर लिखी दो किताबों से प्रेरणा लेना चाहिए कि दूसरे शायरों पर भी इस तरह काम करें। उन्होंने गालिब के 100 साल बाद काम किया और उनकी जन्मतिथि 1212 बताई और गालिब के संबंध में विश्वसनीय जानकारी के लिए खुद को स्थापित किया जो मामूली बात नहीं है। प्रो. सरवत तकी ने सेमिनार की रिपोर्ट पेश करते हुए कहा कि सेमिनार काजिम शनासी में अहम काम करेगा। एरा विवि की उपकुलपति प्रो. फरजाना मेहदी ने कहा कि डॉ. काजिम अली खां की किताबों को पुस्तकालयों में पहुंचवाया जाएगा और जो किताबें प्रकाशित नहीं हो सकी उन्हें प्रकाशित कराया जाएगा। उर्दू विवि के टॉप छात्र को एवार्ड की औपचारिक घोषणा विधिवत की जाएगी। उन्होंने सेमिनार के सफल आयोजन के लिए मौलाना आजाद राष्ट्रीय उर्दू विवि, मौलाना आजाद विवि लखनऊ प्रभारी डॉ. हुमा याकूब, उमैर मंजर व टीम का आभार जताते हुए, हम अकेले की चले थे जानिबे मंजिल मगर, लोग साथ आते गये कारवां बनता गया से अपनी बात खत्म की।

सेमिनार में अतिथियों का आभार

मौलाना आजाद राष्ट्रीय उर्दू विवि की लखनऊ प्रभारी डॉ. हुमा याकूब ने जोश मलिहाबादी की नज्म पढ़ते हुए सेमिनार में शामिल अतिथियों एरा विवि के कुलपति प्रो. अब्बास अली मेहदी, मोहसिन अली खां, शोधार्थियों व उपस्थित लोगों का आभार जताया।